E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2019; 1(1): 241-243
Received: 11-06-2019
Accepted: 16-07-2019

डा0 मंजु चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, आर0बी0डी0 महिला महाविद्यालय,बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डा0 मंजु चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, आर0बी0डी0 महिला महाविद्यालय,बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

ग्रामीण विकास एवं कृषि आधुनिकीकरण

डा0 मंजु चौधरी

प्रस्तावना

भारत गांवों में बसता है इसलिए जब तक गांवों का विकास नही होगा तब तक सशक्त एवं समृद्ध भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। ये सब तभी सम्भव है जब भारतीय ग्रामीणों द्वारा कृषि के तरीकों में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग हो। भारतीय समाज में कृषि लंबे अरसे तक परम्परागत रही है प रम्पर और आधुनिकीकरण दोनों विरोधी अवधारणायें हैं। कृषि के सन्दर्भ में विद्वानों का मत है कि कृषि सभी संस्कृतियों की संस्कृति है अर्थात कृषि के विकास के बगैर ग्रामीण विकास की कल्पना नहीं की जा सकती और ग्रामीण विकास तथा आुधनिकीकरण दोनों ही विकासोन्नमुखी परिवर्तन की प्रक्रियायें हैं इसलिए ग्रामीण विकास के लिये आवश्यक है। कि कृषि का आधुनिकीकरण किया जाय। यह प्रक्रिया मानसिक दृष्टिकोण परिवर्तन से वांछित तकनीक की ओर अग्रसर होने का संकेत करती है।

प्रश्न उठता है कि कौन–से परिवर्तन होने, कौन–सी स्थिति पैदा होने या कौन–सी प्रक्रिया प्रारम्भ होने पर उसे हम आधुनिकीकरण कहेंगे। साधारणतः आधुनिकीकरण के आदर्श पाश्चात्य देश एवं उनमें होने वाले परिवर्तन ही रहे हैं। जैसा कि विभिन्न विद्वानों ने आधुनिकीकरण के विभिन्न सूचक बताये हैं जो इस प्रकार हैं– डेयिनल लर्नर[1] के अनुसार तद्नुभूति, गतिशीलता, साक्षरता और संचारता सम्बद्धता आदि को आधुनिकीकरण का सूचक बताया है। एलमण्ड और कौलमैन[2] ने राजनीतिक दृष्टिकोण से आधुनिक समाज के लिये रुचि संधियोजना, रुचि एकत्रीकरण, संस्थागत राजनीति व्यवस्था आदि को बताया है। डेविड मैक्लीलैण्ड3 ने मनोविज्ञानिक दृष्टिकोण से आधुनिक व्यक्ति के लिये 'स्व–आस्था' और उपब्धि उन्मेष प्रमुख गुणों से युक्त होना बताया है। अन्य विद्धानों में कृषि भूगोलविद् सिंह जसवीर[4], तिवारी आर.सी.[5], हुसैन माजिद6 के अनुभाविक अध्ययन महत्वपूर्ण हैं। भारतीय कृषि; परम्परागत व आधुनिकता के दो ध्रवों के बीच खड़ी है : एक ओर अतीत का आकर्षण तो दूसरी और प्रगति की अनिवार्यता। परन्तु आज का किसान आधुनिकता से दूर नहीं है। कृषि क्षेत्र में नई–नई तकनीकी का भरपूर प्रयोग हो रहा है। कृषि आधुनिकता के क्षेत्र में संचार क्रान्ति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अध्ययन के उद्देश्य यों तो प्रत्येक शोध को कोई न कोई मौलिक उद्देश्य अवश्य होता है। मेरे शोध का मौलिक उद्देश्य ग्रामीण विकास में कृषित आधुनिकीकरण के योगदान का आँकलन करना है सम्प्रति कुछ अन्य पूरक उद्देश्य निम्नांकित हैं–

1. सूचनताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
2. उन सूचकों की जानकारी करना जो कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत आधुनिकीकरण के रूप में प्रभावी हैं।
3. 'आधुनिकीकरण की प्रक्रिया' के प्रति सूचनताओं की प्रतिक्रिया (मनोवृत्तियाँ) जानना।
4. सुझाव प्रस्तुत करना ताकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को और अधिक क्रियाशील बनाया जा सके।

परीक्षणार्थ परिकल्पनाएँ : प्रस्तावित शोध हेतु निम्नांकित परिकल्पनाएँ परीक्षणार्थ निर्मित की गयी हैं–

1. 'ग्रामीण विकास' कृषि विकास पर निर्भर है।
2. अध्ययन क्षेत्र के गांवों में कृषि की परम्परागत तकनीक परिवर्तित हुई है।
3. कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत आधुनिकीकरण हुआ है।
4. कृषि तकनीक के सन्दर्भ में किसानों के दृष्टिकोण परिवर्तित हुए हैं।

विधि तन्त्र : ग्रामीण विकस एवं कृषित आधुनिकीकरण इस अध्ययन करने के लिए उत्तर प्रदेश के इटावा जनपद के बढ़पुरा विकास खण्ड से चयनित 10 ग्रामों के 100 किसानों (प्रत्येक गाँव से 10–10 किसानों का चयन) उद्देश्यपरक निदर्शन पद्धति से करके यह जानने का प्रयास किया है कि क्या अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि विकास 'आधुनिकीकरण की देन' है तथा ग्रामीण विकास में आधुनिकीकरण की भूमिका का स्वरूप क्या है? वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परीक्षण कर निष्कर्ष स्थापित

किये गये हैं जिसके लिए एक पूर्व परीक्षित साक्षात्कार अनुसूची निर्मित की गयी और इसका परीक्षण 'पायलट सर्वे' द्वारा किया गया है। तत्पश्चात् प्राथमिक तथ्य चयनित सूचनादाताओं से आमने–सामने की प्रत्यक्ष स्थिति में व्यक्तिगत साक्षात्कार सम्पन्न कर अवलोकन पद्धति अपनाते हुए प्राथमिक/क्षेत्रीय तथ्य संकलित कर तथ्य विश्लेषण में सांख्यिकी पद्धति अपनायी गयी है। तथ्य संकलन : विश्लेषण तथा तत्सम्बन्धित निर्वचन–

तालिका 1: निदर्शिता की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि

जाति	सवर्ण 35 (35.00)	पिछड़ी 49 (49.00)	अन्य 17 (17.00)	योग 100 (100.00)
आयु वर्ग	20 से कम 17 (17.00)	20–35 34 (34.00)	35 से उपर 49 (49.00)	योग 100 (100.00)
शैक्षिक स्तर	निरक्षकर 27 (27.00)	साक्षर 25 (25.00)	शिक्षित 48 (48.00)	योग 100 (100.00)
व्यवसाय	किसान 44 (44.00)	श्रमिक 32 (32.00)	नौकरीपेशा 24 (24.00)	योग 100 (100.00)
आय वर्ग	निम्न 26 (26.00)	मध्य 35 (35.00)	उच्च 39 (39.00)	योग 100 (100.00)

उपर्युक्त तालिका स्पष्ट है कि सूचनाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि में विभिन्न कारको को लिया है जिसमें जातिगत आधार पर विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि चयनित सूचनाताओं में 34 (34 प्रतिशत) सवर्ण, 49 (49 प्रतिशत) पिछड़ी जाति, 17 (17 प्रतिशत) अनुसूचित जाति वर्ग के किसानों से साक्षात्कार किया। आयु वर्ग के आधार पर 100 किसानों में 20 वर्ष से कम 17 (17 प्रतिशत) सूचनाताओं, 20 से 35 वर्ष के 34 (34 प्रतिशत) तथा 35 वर्ष से अधिक 49 (49 प्रतिशत) सूचनाताओं से जानकारी प्राप्त की। शैक्षिक स्तर 27 (27 प्रतिशत) निरक्षर, 25 (25 प्रतिशत) साक्षर, 84 (84 प्रतिशत) शिक्षित व्यक्तियों से सम्पर्क किया। व्यवसायिक संरचना के आधार पर 44 (44 प्रतिशत) किसान, 32 (32 प्रतिशत) श्रमिक, 24 (24 प्रतिशत) नौकरीपेशा आदि तथा आय वर्ग के आधार पर 26 (26 प्रतिशत) निम्न वर्ग, 35 (35 प्रतिशत) मध्यम वर्ग तथा 39 (39 प्रतिशत) उच्च वर्ग के सूचनादाताओं से साक्षात्कार किया।

तालिका 2: कृषि आधुनिकीकरण के सूचकों के प्रति स्वीकारोक्तियाँ

कृषि आधुनिकीकरण के सूचक	सूचको के प्रति स्वीकारोक्तियाँ				
	हाँ	उदासीन	नहीं	अनुत्तरित	योग
बढ़ती साक्षरता/शिक्षा	95 (95.00)	5 (5.00)	.	.	100 (100.00)
यंत्रीकरण व बदलती तकनीक	88 (88.00)	10 (10.00)	.	2 (2.00)	100 (100.00)
उत्पादन में वृद्धि व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि	89 (89.00)	11 (11.00)	.	.	100 (100.00)
संचार साधनों में वृद्धि	80 (80.00)	11 (11.00)	6 (6.00)	3 (3.00)	100 (100.00)
कृषि तकनीक के प्रति बदलता दृष्टिकोण	88 (88.00)	7 (7.00)	5 (5.00)	.	100 (100.00)
कार्यबचाव एवं जोखित उठो की क्षमता में वृद्धि	76 (76.00)	15 (15.00)	9 (9.00)	.	100 (100.00)
धन के प्रति नवीन दृष्टिकोण	93 (93.00)	4 (4.00)	2 (2.00)	1 (1.00)	100 (100.00)

प्राप्त तथ्यों के सूचकों के प्रति स्वीकारोक्तियों का विश्लेषण

कृषि आधुनिकीकरण की दशा ज्ञात करने के लिए उपरोक्त सूचकों प्रति स्वीकारोक्तियों का आंकलन किया गया है। बढ़ती साक्षरता एवं शिक्षा के प्रति सूचनादाताओं ने 95 प्रतिशत की सहमति प्रदान की है कि शिक्षा का प्रचार–प्रसार तीव्रगति से बढ रहा है जिससे आधुनिकीकरण में परिवर्तन हो रहा है। यंत्रीकरण के प्रयोग में 88 प्रतिशत लोगों ने सहमति प्रदान की है। उत्पादन में वृद्धि व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के लिए 89 प्रतिशत सूचनादाताओं ने हाँ तथा शेष ने उदासीन अथवा नहीं में उत्तर दिया। आधुनिकीकरण से संचार साधनों में भी वृद्धि हुई है इसके लिए भी 80 प्रतिशत लोगों ने हाँ में उत्तर दिया है। दृष्टिकोण परिवर्तन के लिए भी 100 सूचनादाताओं में से 88 88 प्रतिशत सूचनादाताओं ने सकारात्मक जबाब दिया है। मानव की कार्य शैली तथा जोखिम लेने की क्षमत में वृद्धि हुई है इसके लिए भी 76 76 प्रतिशत सूचनादाताओं ने सहमति दर्शायी है। इसके अतिरिक्त धन के प्रति भी मानव का दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है, जिसमें 93 93 प्रतिशत सूचनादाता सहमत हुए हैं। उक्त तालिका से परिकल्पना नम्बर 5 सत्य एवं सार्थक सिद्ध हुई है।

तालिका 3: विभिन्न निर्दिष्ट संदर्भो के प्रगति सूचनादाताओं के दृष्टिकोण (अभिमत)

विवरण	सूचनदाताओं की मनोवृत्तियाँ			योग
	पक्ष में	उदासीन	विपक्ष में	
ग्रामीण विकास कृषि पर निर्भर है	77 (77.00)	13 (13.00)	10 (10.00)	100 (100.00)
गाँवों में कृषि की परम्परागत तकनीक बदली है।	90 (90.00)	07 (07.00)	03 (03.00)	100 (100.00)
कृषि में आधुनिकीकरण हुआ है।	91 (91.00)	07 (07.00)	02 (02.00)	100 (100.00)
आधुनिकीकरण विकास की कुँजी है।	80 (80.00)	07 (07.00)	13 (13.00)	100 (100.00)
कृषि तकनीक के सम्बन्ध में किसानों के दृष्टिकोण बदले है।	92 (92.00)	05 (05.00)	03 (03.00)	100 (100.00)

उपर्युक्त तालिका नम्बर–3 के आँकड़े का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सूचनादाताओं की मनोवृत्तियाँ– 'ग्रामीण विकास कृषि पर निर्भर हैा' के पक्ष में 77 (77.00), उदासीन 13 (13.00) तथा विपक्ष में 10 (10.00) है। 'गाँवों' की कृषि की परम्परागत तकनीक बदली है।' इसके पक्ष में 90 (90.00), उदासीन 07 (07.00) तथा 03 (03.00) सूचनादाता हैं 'कृषि में आधुनिकीकरण हुआ है।' इस मत के पक्ष में 91 (91.00), उदासीन 07 (07.00) तथा मात्र 02 (02.00) सूचनादाताओं में विपक्ष में विचार प्रकट किया है। 'आधुनिक विकास की कुँजी है।' इस मत के पक्ष 80 (80.00), उदासीन 07 (07.00) तथा 13 (13.00) सूचनादाताओं में विपक्ष में राय प्रदान की है। 'कृषि तकनीक के सम्बन्ध में किसानों के दृष्टिकोण बदले है।' इस सम्बन्ध में 92 (92.00) पक्ष में, 05 (05.00) उदासीन तथा केवल 03 (03.00) ने विपक्ष में राय व्यक्त की है। उक्त तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि परिकल्पना नम्बर–1,2,3,4, एवं 5 सत्य एवं सार्थक सिद्ध हुई है।

शोधार्थी ने सभी 100 सूचनदाताओं से प्राप्त तथ्यों से असंगत/आकस्मिकता गुणांक (Q) की गणना का भी है ताकि यह जाना जा सके कि आधुनिकीकरण तथा ग्रामीण विकास परस्पर घनिष्ठ रूप से निबद्ध तथा विकासोन्मुखी प्रक्रियाएँ हैं अथवा नहीं हैं?

सामाजिक प्रक्रियाएँ	सूचनदाताओं की आवृत्तियाँ		योग
	सहमत	असहमत	
आधुनिकीकरण	91	9	100.00
ग्रामीण विकास	80	20	100.00
	171	29	–

$$\text{असंगत/आकस्मिकता गुणांक (Q)} = \frac{AD-BC}{AD+BC} = \frac{91X20-9X80}{91X20+9X80} = \frac{1820-720}{1820+720} = \frac{1100}{2540} = 0.43$$

चूंकि Q का गणनात्मक मान 1 के मध्य तथा धनात्मक प्राप्त हुआ है अतः स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण तथा ग्रामीण विकास घनिष्ठ रूप से निबद्ध प्रक्रियाएँ हैं। सुस्पष्ट है कि कृषित आध्अधुनिकीकरण से ग्रामीण विकास हो रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझावः शोध अध्येता ने अध्ययन के आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त किए है–

1. 'ग्रामीण विकास' कृषि विकास पर निर्भर है।
2. अध्ययनार्थ चुने गांवों में कृषि की परम्परागत तकनीक आधुनिकता की ओर परिवर्तित हुई है।
3. कृषित क्षेत्र के अन्तर्गत आधुनिकीकरण हुआ है।
4. 'आधुनिकीरण' विकास की कुंजी है।
5. कृषि तकनीक के सन्दर्भ में किसानों के दृष्टिकोण परिवर्तित हुए हैं।

ग्रामीण विकास हेतु कृषि का आधुनिकीकरण आवश्यक हैं। अतः कृषि के आधुनिकीकरण हेतु निम्नलिखित सुझाव समीचीन है–

1. कृषि को आधुनिकीकरण करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रान्तर्गत प्रचार–प्रसार पर बल दिया जाए।
2. कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जैविक कृषि एवं प्रमाणित बीजों आधुनिक तकनीक, उर्वरकों, कीटनाशक, पैस्टीसाइड्स आदि के प्रयोग पर कार्यशालाएँ प्रायोजित की जायें।
3. ग्रामीणों के दृष्टिकोण परिवर्तित करने के लिए कृषि क्षेत्रान्तर्गत यांत्रिक उपयोग, रासायनिक खादों, कीटनाशकों के प्रयोग पर 'माडल कृषि' आदि करने को प्रोत्साहित किया जाए।
4. किसानों की मनोवृत्तियाँ बदलने के लिए किसान गोष्ठियाँ, चौपाल व कृषिम दर्शन कार्यक्रम, कसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनियों आदि का आयोजन किया जाए।

सन्दर्भ

1. डेनियल लर्नर; मॉडर्नाडजेशन : सोशल आसपेक्टस इन एनसाइक्योपीडिया ऑफ सोशल साइसन्सेज, मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क। उद्धृत : एम.एस. गोरे, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 1997 पृ. 34
2. जी.एल. एलमण्ड एंव जे.एस. कॉलमैन–दी पालिटिक्स ऑफ डेवलपिंग एरियाज–प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस प्रिंसटन, न्यूजर्सी, 1960, पृ. 87–88
3. डेविड मैक्लीलैण्ड–दी एचीविंग सोसाइटी, वान मास्ट्रेन्ड कम्पनी प्रिंसटन, न्यूजर्सी, 1991, प पृ. 107
4. सिंह जसवीर, एगीकल्पचर ज्योग्राफी, टाटा, मैक ग्रा कम्पनी, न्यू दिल्ली, 2004, पृ. 225
5. तिवारी आर.सी., कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 2004, पृ. 76
6. हुसैन माजिद, कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पंचम संस्करण 2000, पृ. 181